सुंदरता

नारायण लाल 'अध्यापक'

सुंदरता की रूप है नारी.
इसीलिए तो सबकी प्यारी.
बोली इनकी मीठी न्यारी.
पर जाती है सब पर भारी.
कठिनाईयों से कभी न हारी.
मन में है संकल्प जो भारी.
गुण की खान सहेजे सारी.
पर खुशियों पर हो जो वारी.
नहीं दिखाए अपनी लाचारी.
रिश्तों की भी समझ है भारी.
जिसे निभाती बारी बारी.
चाहे बनना पडे बेचारी.
सबकी करती है तैयारी.
नारी की परिधान है साड़ी.
दिखती इसमें बेहद प्यारी.
कर्तव्यों से बंधी है नारी.
संस्कारों से युक्त है नारी.
इसीलिए वो सबको प्यारी.
रस और गंध की खान है नारी.
इसीलिए पुरूषों पर भारी.

Scanned with OKEN Scanner